ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S
DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
Dist.Nanded

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - X Issue - I January - March - 2021

ENGLISH / MARATHI PART - III / HINDI

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist. Nanded

The information and views expressed and the research content published in this journal, the sole responsibility lies entirely with the author(s) and does not reflect the official opinion of the Editorial Board, Advisory Committee and the Editor in Chief of the Journal **"AJANTA"**.

Owner, printer & publisher Vinay S. Hatole has printed this journal at Ajanta Computer and Printers, Jaisingpura, University Gate, Aurangabad, also Published the same at Aurangabad.

Printed by

Ajanta Computer, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad. (M.S.)

Printed by

Ajanta Computer, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad. (M.S.)

Cell No. : 9579260877, 9822620877, 7030308239 Ph. No. : (0240) 2400877

E-mail : ajanta6060@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - Impact Factor - 6.399 (www.sjifactor.com)

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR * Dist.Nanded *

EDITORIAL BOARD

Professor Kaiser Haq
Dept. of English, University of Dhaka,
Dhaka 1000, Bangladesh.

Roderick McCulloch
University of the Sunshine Coast,
Locked Bag 4, Maroochydore DC,
Queensland, 4558 Australia.

Dr. Ashaf Fetoh Eata
College of Art's and Science
Salmau Bin Adbul Aziz University. KAS

Dr. Nicholas Loannides
Senior Lecturer & Cisco Networking Academy Instructor,
Faculty of Computing, North Campus,
London Metropolitan University, 166-220 Holloway Road,
London, N7 8DB, UK.

Muhammad Mezbah-ul-Islam
Ph.D. (NEHU, India) Assot. Prof. Dept. of
Information Science and Library Management
University of Dhaka, Dhaka - 1000, Bangladesh.

Dr. Meenu Maheshwari
Assit. Prof. & Fonner Head Dept.
of Commerce & Management
University of Kota, Kota.

Dr. S. Sampath
Prof. of Statistics University of Madras
Chennari 600005.

Dr. D. H. Malini Srinivasa Rao
M.B.A., Ph.D., FDP (IIMA)
Assit. Prof. Dept. of Management
Pondicherry University
Karaikal - 609605.

Dr. S. K. Omanwar
Professor and Head, Physics,
Sat Gadge Baba Amravati
University, Amravati.

Dr. Rana Pratap Singh
Professor & Dean, School for Environmental
Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar
University Raebareily Road, Lucknow.

Dr. Shekhar Gungurwar
Hindi Dept. Vasantrao Naik
Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.

Memon Sohel Md Yusuf
Dept. of Commerece, Nirzwa College
of Technology, Nizwa Oman.

Dr. S. Karunanidhi
Professor & Head,
Dept. of Psychology,
University of Madras.

Prof. Joyanta Borbora
Head Dept. of Sociology,
University, Dibrugarh.

Dr. Walmik Sarwade
HOD Dept. of Commerce
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada
University, Aurangabad.

Dr. Manoj Dixit
Professor and Head,
Department of Public Administration Director,
Institute of Tourism Studies,
Lucknow University, Lucknow.

Prof. P. T. Srinivasan
Professor and Head,
Dept. of Management Studies,
University of Madras, Chennai.

Dr. P. Vitthal
School of Language and Literature
Marathi Dept. Swami Ramanand
Teerth Marathwada University, Nanded.

ADARSH VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR * Dist. Nanded *

EDITORIAL BOARD

Dr. Jagdish R. Baheti
H.O.D. S. N. J. B. College of Pharmacy,
Meminagar, A/P. Tal Chandwad, Dist. Nashik.

Dr. Sadique Razaque
Univ. Department of Psychology,
Vinoba Bhave University,
Hazaribagh, Jharkhand.

Prof. Ram Nandan Singh
Dept. of Buddhist Studies University of Jammu.

Dr. Safiqur Rahman
Assistant Professor, Dept. of Geography,
Guwahati College Bamunimaidam, Guwahati,
Assam.

Dr. N. J. M. Reddy
Principal, Shree Renukadevi Art's Commerce
Science Mahavidyalaya Mahur.

Madhavrao Gajananrao Joshi
Department of Hindi, Shree Renukadevi
Art's Commerce Science Mahavidyalaya, Mahur.

PUBLISHED BY

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist. Nanded

VOLUME - X, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2021
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	संत सेवालाल महाराज की भविष्यवाणी **प्रा. डॉं. अभिमन्यु नरसिगराव पाटील**	१-५
२	संत सेवालाल महाराज के सामाजिक विचार एवम् कार्य **डॉ. बालासाहेब शिवाजी पवार**	६-१०
३	बंजारा समाज: स्वरुप और संवेदना **डॉ. देविदास भिमराव जाधव**	११-१४
४	शिक्षा का अधिकार: एक सिंहावलोकन **डॉ. गौरव कुमार मिश्र**	१५-१८
५	संत सेवालाल की महानता **प्रा. डॉ. खेडेकर एम. यू.**	१९-२१
६	बंजारा समाज और संत सेवालाल महाराज **माधवराव गजाननराव जोशी**	२२-२८
७	बंजारा समाज का स्वरूप तथा सेवालाल महाराज का योगदान **प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश**	२९-३१
८	संत सेवालाल महाराज का व्यक्तिमत्त्व **प्रा. डॉ. जाधव के.के.**	३२-३६
९	गोरबंजारा परंपरा की विशेषताएँ **प्रा. डॉ. साहेब राठोड**	३७-३९
१०	क्रांतिकारी संत सेवालाल महाराज के विचारों की प्रासंगिकता **प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ**	४०-४४
११	वैश्वीरकण के परिप्रेक्ष्य में संत सेवालाल के विचारो की प्रासंगिकता **प्रा. संतोष विजय येरावार**	४५-५०
१२	धर्मगुरु संत सेवालाल **डॉ. वंदन बापुराव जाधव**	५१-५३

VOLUME - X, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2021
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com) AP- 05

११. वैश्वीरकण के परिप्रेक्ष्य में संत सेवालाल के विचारो की प्रासंगिकता

प्रा. संतोष विजय बेरावार
देगलूर महाविद्यालय देगलूर.

वैश्वीकरण ने संपूर्णत: मानव जीवन को प्रभावित किया हैं | सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक राजनैतिक और पारिवारिक परिवेश को वैश्वीकरण ने सकारात्मक एवं नकारात्मक रुप से प्रभावित किया है | वैश्वीकरण के कारण एक और मानव विकास की नितनई उँचाईयों को प्राप्त कर रहा है | जिस कारण भौतिक सुखसाधनों का महत्व मानव जीवन में तीव्रता एवं प्रखरता से बढ रहा है | तो दूसरी और मानव नैतिक दृष्टि से पतित हो गया हैं | सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं आथिक परिस्थितियों में विडंबनाए विकृतियों एवं विषमताओ ने अपने रुद्र रुप को धारण किया है | बाहयआंडबरो का बढता महत्व, मानवीय मुल्यों का पतन, प्रेम का विकृत रुप, भौतिक सुखसाधनों के बढते महत्व के कारण निर्माण लुट- खसोट और भ्रष्टाचार, वासना की लालसा, हेतू स्त्री देह का होता उपभोगीकरण, बढती सामाजिक विषमता, अमानंवियता, चरित्रहिनता, पाखंड, समाज माध्यमों से उपजी विकृतियाँ, राजनीतिक पतन और टुटती- बिखरती भारतीय सभ्यता यह सब देन वैश्वीकरण की हैं | मानवीय एवं सामाजिक मुल्यों के पतन के इस दौर में मानव को मानव बनाने की क्षमता, समाज को सही दिशा देने का सामर्थ्य संत साहित्य में है | सेवालाल भी उसी संत परंपरा की धरोहर धारक है | संत सेवालाल के विचार नैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त और प्रासंगिक हैं |

सेवालाल के विचार मानवता एवं सामाजिकता को संजीवनी प्रदान करते हैं | धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में बढती अनैतिकता और आरजकता, मानवी जीवन में पैंसो के बढते महत्व के कारण निर्माण पिशाच्च एवं अंध लालसा, नैतिक अधपतन, रिश्तो के बीच टकराहट, स्त्री देह को पाने की विकृत कामना, अवांछित अपेक्षाए, महानगरीय परिवेश में बढती विकृतितयाँ, परिवार में बढता अविश्वास और बिखराव, संस्कृति का होता अवमूल्यन, प्रेम के स्थान पर उपभोग का बढता महत्व सत्ता की कामना से उपजी अमानवियता और पशुता यह सब वैश्वीकरण की देन हैं | ऐसे पतनशील युग में समाज और व्यक्ति को सही और गलत से परिचित कराने के लिए सेवालाल के सर्वसमावेशक विचारों की नितात आवश्कता हैं | संत सेवालाल समाज की दूरावस्था को देखकर समाज को जगाने का कार्य अपने जीवन में निरंतर करते रहे |

समानता और मानवप्रेम का संदेश संत सेवालाल ने दिया है | वर्ग, वर्ण, जाति, रंग, के भेदभाव के कारण मानव-मानव के तरफ हिन भाव से देखता है |

"कोई केती मोठो हेई,
कोई केती नानक्या हेई
केनी भजो मत,

केनी पुजो मत,

धुपो मत,

पुजा पाठ में वेळ घाले पेक्षा

करणी करे शिकोश"

समानता, कर्मश्रेष्ठता और मानव प्रेम का मंत्र सेवालाल जी ने दिया है | मानवीय स्वार्थ के कारण बढती असमानता संघर्ष को जन्म देती हैं जिस कारण मानवीय संबध स्वार्थ से लिप्त और विकृति से ग्रसित हो जाते हैं | श्रम प्रतिष्ठा का प्रतिपादन कर बाहयआंडबर और लुट-खसेट का विरोध किया हैं | मानव के प्रतिष्ठा और समाज के उत्थान हेतू श्रम की प्रतिष्ठापना अनिवार्य है | जन-मानस को श्रम का महत्व समझना अनिवार्य है और यही कार्य संत सेवालाल ने किया है | धार्मिक लूट-खसोट को कर्मकांड प्रेरित करता है| विषमता को बढावा कर्मकांड के कारण प्राप्त होती है | इसी का विरोध संत सेवालाल ने किया है | संत सेवालाल विषमता का घोर विरोध कर समानता का संदेश देते है जिसकी आज नितांत आवश्यकता हैं |

"कोयी नानो मोठो हे"

संत सेवालाल कहते है की मनुष्य अपने बैल पर अपना जीवन समृध्द बना सकता हैं | श्रम ही भविष्य का निर्माता हैं | श्रम में ही मानव और समाज का कल्याण है | सत्य का समर्थन कर जनकल्याण और सामाजिक समस्या निवारन हेतू कार्य करना चाहिए | उँच-नीच के भेद को तोंडकर समानता को अपनाना चाहिए | संत सेवालाल लोगों को अंध अनूकरन छोड विवेकी बनने का संदेश देते हुए कहते है,

"जाणजो, छाणजो अन पहच मानजो"

मिडिया और समाज माध्यम प्रधान वर्तमान समाज में सेवालाल के यह विचार अतंत्य प्रासंगिक हैं | मनुष्य को बिना सोचे - समझे अन्य की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहीए | आज मिडिया, समाज माध्यमों और आंतरजाल के द्वारा अधिकतर झूठ परोसा जा रहा हैं जिस सामान्य जन मानस सत्य मानकर उससे प्रभावित हो रहा हैं जिस कारण मनुष्य को नुकसान, निराशा और संत्रास ही मिल रहा हैं | संत सेवालाल कहते है मनुष्य को अनुकरण करने से पहले या कोई भी कार्य करने से पहले अन्तरात्मा की आवज समझकर, जांच - पडताल करके ही कार्य करना चाहिए |

संत सेवालाल चिंतनशील समाजसुधारक थे | वर्तमान समय में व्याप्त विकृतियों का आंदेशा उन्होने आठरावी शताब्दी में व्यक्त किया था | दे अतंत्य दूरदृष्टा समाज सेवक थे |

"यी सतयुग छ, येरे वाद कलीयुग आये |

कलि युगेम कल्लोळ चालीय, मायेन बेटा भारी पीय ||

रपिया कटोरो पाणी वक जाय, रपियार तेरं चणा व कीय |

रंडी से राज आय, सोने रे सिंग, गवा वकजाय |

गोधनेन चारो कोणी मळ, हाडकारो ठे र पडजाय |

रपिया लेन गली गली किरीये, अन्न कोणी मक

वाणावाणार दख आय, घर घर वैद्य आया |

वैद्य दखेर परख करीये ओन दख लाभ कोणी |

बोलतु - बोलतु मनकीया मरिय |

घर - घर भगत विहे, आळी - आळी, नंगारा वाज जाय |

घर - घर नायक विहे, घर - घर काल धरस जाय |

भाई - भाईरो पटं कोणी, बाप बेटा रो पटं कोणी |

सासु - बोडीरो पटं कोणी, घरे - घरेन कलोक चालीय |

पापीरो साल रीटे, पापीर घर रीपया रडी रही हिंडीय |

लांबे तांडेरे मलकेन गोर जाये | मार गोर बंदा करिये छंद

घर - घर नांदीये मुसळ कंद | आन कुण तारीये तारीये"

सेवालाल महाराज नें वर्तमान समस्या का अंदेशा अठरावी शताब्दी में व्यक्त किया था जिन समस्याओं और मानसिकता का चित्रण उन्होंने किया आज यह सारी समस्याएं विकृत रूप धारन कर चुकी हैं | वर्तमान में कोरोना महामारी नें संपूर्ण विश्व को आपने गिरफत में लिया हैं | सर्वत्र हानी ही हानी हो रही हैं | लाशों के अंबार लगे हैं | सेवालाल महाराज ने कहाँ था भविष्य में तरह - तरह की बिमारियाँ आयेगी | डॉक्टर इलाज हेतू सर्वत्र भटकते रहेंगे | बिमारी के कारन लोग बोलते - बोलते मर जाएंगे | इबोला, चिकनगुनिया, प्लेग, बर्ड फ्ल्यु, जीका वायरस, कोरोना वायरस आदि बिमारियों नें मनूष्य और राष्ट्र को हानी पहूँचाई है | संत सेवालाल ने जो अरोग्य विषयक समस्या का विश्लेषण किया था आज वह यथार्थ हो गया है | उन्होंने आगे कहाँ था पानी बिकने लगेगा | भाई - भाई आपस में लडने लगेंगे, बाप - बेटे में मतभेद होगा | रिश्ते - नाते बिखर जायेंगे | सर्वत्र मंहगाई का बोल - बाला होगा | नितिहीन लोगों का राजपाठ आयेगा | सामाजिक मूल्यों का नाश होगा | चोरों को मान - सम्मान मिलेगा |

सामाजिक मुल्यों का नाश होगा | अराजकता एवं चरित्र हिनता की सार्वत्रिकता होगी | सेवालाल की ये सारी भविष्यवाणी यथार्थ साबित हो रही है | बढते अपराध, लैंगिक शोषण, अनैतिक संबध, घटस्फोट, पारिवारिक कलह, स्वार्थ प्रधान अंध मानसिसकता, लिव्ह इन रिलेशनशीप, अनुबंध विवाह प्रणाली, अर्थ के लिए होनेवाली माँता-पिता और भाईयों की हत्या, ढोंग, पाखंड, जालसाजी कर ठगने की प्रवृत्ती, व्यसनाधिनता, वासनांधता, राजनितितक विक्षिप्त मानसिकता, सांस्कृतिक और धार्मिक अधपतन यह सब कुछ सामाजिक मुल्यों, और नैतिक अधपतन के कारण हो रहा हैं| भारतीय संतो के विचार टुटते-गिरते समाज और मनुष्य को उभारने का और सही दिशा देने का सामर्थ्य रखते है |

संत सेवालाल मानव कल्याण के साथ साथ प्रकृति और पशु-पक्षीयों के कल्याण की भी कामना करते हैं |प्रकृति देवता से, मानव, भू, चिटियाँ और जीव जंतू पर दया करणे की प्रार्थना करते हैं | समस्त के कल्याण की कामना संत साहित्य की विशेषता हैं | वर्तमान में पर्यावरण होता-ऱ्हास और असंतुलन यह मानव के अतिलालसा का परिणाम है.| स्वार्थ से लिप्त मानव आपने अनंत लालसाओ की पुर्तता हेतू पर्यावरण और पशु- पक्षियों का दोहन कर रहा हैं | पर्यावरण के बिघडते असंतुलन के कारण अनेक प्राकृतिक अपदाये तीव्र गती से बढ रही हैं | मानव, पशु-पक्षी, पेड-पौधे सभी की घोर हानी हो रही है . | ऐसे समय में समस्त भू-तत्वों के कल्याण की भावना नितांत आवश्यक हैं | संत सेवालाल के विचार मानव, पर्यावरण एवं पशु-पक्षीयों के प्रति सचेत कर पर्यावरणीय संतुलन बनाये रखने की कामना करते है |

"जय जय मन्यामा याडी, सेन साई देस याडी |
गोर कोरेन साई वेस, जीव जंतून साई वेस |
कीडी मुंगीन साई वेस याडी, जीवन जनगाणीन साई वेस |
बालबच्चान साई वेस,वाडी नगरीन साई वेस याडी |
याडी, सत्य काम कत्ते कर, भलेती भेट करा याडी |
आयो विघन टाक, समर वत आढळ आजो याडी |
कयेरी पांचेन काढ, सावकोरन मुंढाग रखाड |
काडे माथेर मनक्या छा, दगे पगेम चुका छा,
भुलो चको माफ कर याडी" |

समस्त मानव पर दया करने की और उन्हे माफ करने की प्रार्थना सेवालाल जी ईश्वर से करते हैं | दया, उदात्तता, क्षमा, प्रेम, मानवता इन मुल्यों की वर्तमान में नितांत आवश्यकता हैं | भौतिक साधनो की लालसा ने मनुष्य को हिंस-पशु,हत्यारा, अहंकारी, अपराधी और पतित बना दिया हैं| संत सेवालाल के यह विचार मुल्यों की स्थापना हेतू अतंत्य अनिवार्य हैं |

वैश्वीकरण के कारण पूँजीपती व्यवस्था सर्वत्र पनपनें लगी | पूँजीपती मानसिकताने शोषण, अन्याय और पाखंड को बढावा दिया | मानव मशीनों जैसा व्यवहार करने लगा जहाँ कोई संवेदना नहीं होती | निजीकरण, आधुनिकीकरण और भांडवली व्यवस्था नें मानव को घोर पशु-स्वार्थी, असंवेदनशील और आंडबरपुर्ण बना दिया हैं| गरीब, मजदुर और किसानो का शोषण इसी अर्थ केंद्रित यवस्था का परिरणाम है | संत सेवालाल गरीब वर्ग के पक्षधर हैं| गरीबों परअन्याय-अत्याचार करनेवालों के प्रति तीव्र अकोश व्यक्त करते हैं |

"गोर गरीबेन दांडन खाये
ओरी सात पिढी नरकेमं जाये |

और वंशेपर दिवो कोणी रीय

दांडण खायावाको पायरीरो भाटा बनजाय" |

प्रस्थापित शोषण व्यवस्था का विरोध कर समतामुलक समाज की स्थापना करनेवाले और शोषको का तीव्र विवेध कर वंचितो का पक्ष धरनेवाले संत सेवालाल के यह विचार वर्तमान परिरवेश में प्रासंगिगक है |

"भुकेन वाटी खराणू, तरसेण पानी पराणू

भुलाडी पडगोजेण वाट बताणू

आसरेण आयोजेन आसरो देणू

दिने जे वचनेम रेणू यी गोरुरों धर मछ" |

संत सेवालाल जनमास को मानवता को पाठ पढात है | दया, दान, निस्वार्थसेवा, समर्पण, संवेदनशीलता जेसे उदात्त तत्वों की सीख देते हुए कहते है भुखे लागों का खाना देना, प्यासे को पानी देना, भटकनेवाले को सही रास्ता दिखाना| आश्रय में आये निराधार को आश्रय देना उनकी सहायता करना | सत्य और दिये गये वचन का पालन करना यहीं वास्तविक धर्म हैं | मानव अगर लोगों को परेशानी में सहायत नहीं करता तो वंह पशुसम हैं | मानवता धर्म का समर्थन करनेवाले संत सेवालाल के विचार अतंत्य प्रासंगिक हैं | वर्तमान में जहाँ हर कोई इक दुसरे कों लुटने में लगा हैं | शोषण, अन्याय और अत्याचार का बोलबाला हैं | राजनीतिक विषाक्त मानसिकताने सभी को विकृत और विषाक्त बना दियां है | समाज अंदर से खोकला होता जा रहा हैं | झुंठ, फरेब, दमन, प्रलाभन, और वासना बढती जा रही हैं | यैसे समय में समाज को संतो के विचार ही सही दिशा दें सकते हैं |

वैश्वीकरण ने उपभोगवादी संस्कृति को बढावा दिया हैं | पब कल्चर से उपजी वासनांधता और व्यसनाधिनता ने मानव शरीर और विचारों को विकृत बना दिया हैं | भौतिक साधना पाने की लालसा वश चोरी, पाखंड, ढोंग, लुट-खसोट, दमन और अनीति को बढावा दिया हैं | संत सेवालाल समाज को नितीगत रास्ते पर चलने का संदेश देते हैं |

"सुणो सांबको गोर भाई| चोरी मत करजो कोई ||

धर्मेरी वाणी रकाडो भाई | दारु, मत पिजो कोई ||

लाज रकाडो निती धर्मेरी | मतलो जीव, काडो मत लोई"||

अहिंसा, प्रेम, मानवता, सदाचार आदि का समर्थन करनेवाले संत सेवालाल अतंत्य प्रांसगिक बन पडते हैं | वर्तमान में मानव का भौतिक विकास हो गया हैं परंतु नैतिक अधपतन भी उतनी ही तीव्र गती से हुआ हैं | समाज में घटित होनेंवाले बलात्कार, प्रेम के नाम पर होनेंवाले लडकीयोंपर ॲसिड हमले, सत्ता एवंम धन के लिए होनेवाली हत्यायें, परिवार में तुटन और बिखराव, अनैतिक संबधो का बढता प्राबल्य, धर्म के नामपर होनेवाली लुट-खसोट, राजनीति में व्याप्त नीचता, अर्थप्राप्ती की

तीव्र लालसा, वासनाधता यह सब मानव के नैतिक पतन का परिणाम हैं | मानव को नैतिकता के रास्ते पर लाने के लिए संत सेवालाल के विचार अत्यंत उपयुक्त हैं |

संत सेवालाल के विचार मनुष्य को मनुष्य के रुप में प्रतिष्ठा देने का कार्य करते हैं | मानवता धर्म के प्रसारक के रुप में उनकी भुमिका समाज के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं | कुंठित और विकृत प्रवृत्तियों में सकारात्मक परिवर्तन का विश्वास निर्माण करनें में और समतामुलक समाज की स्थापना के लिए संतसेवालाल के विचार मार्गदर्शक की भुमिका निनभाते है | मोहमाया, अहंकार, वासना और स्वार्थ के अंधकार में फसे मानव को सही दिशा देने का कार्य संत सेवालाल ने अपने वाणी के माध्यम से किया है | कर्मकांड, अंधविश्वास उँच-नीच, जाति-पाँति और भाग्यवाद का विरोध कर श्रम की प्रतिष्ठा संत सेवालाल जी ने की हैं | वर्तमान परिपेक्ष्य में जँहा अनैतिकता अपने चरम पर हैं, भोगवाद का सर्वत्र बोलबाला है और सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा पारिवारिक क्षेत्र विकृत और विशाक्त हो गये हैं यैसे बिमारु वातावरण से जनमान को तारने का सामर्थ्य केवल संत साहित्य और सेवालाल के विचारों में है |

संदर्भ ग्रंथ

1. सेवालाल बापू के बोधपद और वचन, ग.ह. राठोड
2. कांतिकारी सेवालाल बापू के बोधप्रद और दुरदर्शी वचन, ग.ह राठोड
3. संत सेवालाल दर्शन, आनंद जाधव
4. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संत साहित्य की प्रांसगिकता, सं. डॉ. अपर्णा पाटील

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded